Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

Original Article

सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यावरण संरक्षण

मुकेश दुबे[1], अमित कुमार पटेल[2]
[1,2] शोध छात्र, भूगोल विभाग उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज
Email: mukeshjaun111@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171034
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 10
Pp. 164-167
October. 2025
Submitted: 19 Sept. 2025
Revised: 29 Sept. 2025
Accepted: 14 Oct. 2025
Published: 31 Oct. 2025

सारांश

भारतीय सांस्कृतिक विरासत अपनी प्राचीनता, विविधता, उदारता और व्यापकता से ओत प्रोत है। हमारी संस्कृति ने प्रकृति व पर्यावरण को प्राकृतिक संसाधन मात्र न मानकर अपने जीवन और आध्यात्मिकता का अभिन्न अंग समझा है। वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण एवं लोक परंपराओं में प्रकृति को पूजनीय माना गया है, जिसका संरक्षण एवं संवर्धन मानव के लिए आवश्यक माना गया है। इस शोध पत्र में भारतीय सांस्कृतिक विरासत और पर्यावरण संरक्षण के आपसी संबंधों का विवेचन करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना, लोक कला, त्यौहार, साहित्य, वास्तुकला, मान्यताएं आदि पर्यावरणीय संरक्षण एवं संवर्धन से ओत प्रोत रही है।

वैदिक पर्यावरणीय दृष्टि, लोक उत्सव में प्रकृति पूजन, बिश्नोई समाज का वृक्ष एवं जीवों के प्रति संवेदना, चिपको आंदोलन, एप्पिको आंदोलन, लोकगीत, पारंपरिक रीति रिवाज एवं कहावतें आदि भारतीय संस्कृति, प्रकृति प्रेम व परिस्थिति संतुलन को मानव केंद्र में रखा है। वर्तमान समय में तीव्र जनसंख्या वृद्धि, औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति को बढ़ावा ने पर्यावरण को काफी क्षति पहुंचाया है। जिससे पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो रहें हैं। अतः आवश्यक है कि हमें अपने सांस्कृतिक विरासत में निहित पर्यावरणीय चेतना को पुनर्जीवित करें व आधुनिकता से जोड़कर हमें पर्यावरणीय चेतना का विकास करना होगा।

अतः यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सतत विकास की भारतीय अवधारणा न केवल तकनीकि उपायों पर आधारित हो सकती हैं, बल्कि हमारे सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक सहभागिता से जोड़ना होगा। भारत की सांस्कृतिक धरोहर न केवल हमारे प्राचीनता की पहचान है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के पर्यावरणीय संरक्षण के लिए एक सशक्त मार्ग प्रशस्त करती हैं।

मुख्य शब्द– *लोक परंपरा, भारतीय संस्कृति, सतत विकास, पर्यावरणीय संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत।*

प्रस्तावना

हमारे देश की पहचान उसके गंभीर सांस्कृतिक परंपराओं, क्षेत्रीय विविधता, और विशेष जीवन दर्शन से होती है। भारतीय संस्कृति केवल धार्मिक कर्मकांड एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों तक ही सीमित नहीं रहा है, बल्कि इसने मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है। भारतीय सांस्कृतिक चिंतन का सबसे महत्वपूर्ण खूबी प्रकृति और पर्यावरण के प्रति समर्पण एवं सम्मान की भावना रही है। वेद, उपनिषद, पुराण, जैन एवं बौद्ध धर्म के साहित्य से लेकर प्रचलित कथाओं तक में पर्यावरणीय सम्मान एवं ईश्वर तुल्य प्रेम दिया जाता रहा है यही कारण है कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत में प्रकृति पूजन, नदियों का संरक्षण, सम्मान, आराधना, वृक्ष पूजन व संरक्षण पर पक्षियों के साथ सहअस्तित्व और जल स्रोतों का सम्मान व पूजन एक स्थाई धरोहर व मूल्य रहा है।

मौजूदा समय में जब विश्व पर्यावरण की समस्याओं से जूझ रहा है तो ऐसे में हमें भारतीय सांस्कृतिक धरोहर सतत विकास और पारिस्थितिक संतुलन का मार्ग प्रशस्त करती है। इस अध्याय का मूल उद्देश्य भारतीय संस्कृत विरासत और पर्यावरण संरक्षण के संबंधों का सूक्ष्म विश्लेषण व अध्ययन करना है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
मुकेश दुबे, शोध छात्र, भूगोल विभाग उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

How to cite this article:
दुबे, . मुकेश ., & पटेल, . अमित . कुमार . (2025). सांस्कृतिक विरासत एवं पर्यावरण संरक्षण. Journal of Research and Development, 17(10), 164–167. https://doi.org/10.5281/zenodo.17646257

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17646257
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

उद्देश्य

- सांस्कृतिक विरासत में निहित पर्यावरणीय दृष्टि का अध्ययन।
- लोक परंपराओं और धार्मिक कारणों से पर्यावरणीय संरक्षण की अवधारणा को समझना।
- वर्तमान समय में सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास से हो रही पर्यावरणीय क्षति के आपसी संबंध का विश्लेषण करना।
- भारतीय संस्कृति में सतत् विकास की संभावनाओं की पहचान करना।

परिकल्पना

यह शोध पत्र इस परिकल्पना पर आधारित है कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत में अंतर निहित पर्यावरणीय नैतिकता एवं संरक्षण आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान हेतु सशक्त वैचारिक और व्यावहारिक आधार प्रदान कर सकती है।

अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति पर आधारित है इसमें गुणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है।

सांस्कृतिक विरासत–

- वेदों और उपनिषदों में पर्यावरणीय दृष्टि हमारे देश की संस्कृति व सभ्यता की जड़ वेदों से जुड़ी है ऋग्वेद में पृथ्वी को माता तथा आकाश को पिता कहा गया है, अथर्ववेद में वृक्ष एवं जल स्रोतों के संरक्षण का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। यजुर्वेद में वायु, अग्नि एवं जल को मानव जीवन का अनिवार्य अंग के रूप में मान्यता दी गई थी, उपनिषदों में **'ईशावास्यमिदं सर्वं'** का सिद्धांत इस विचार को प्रस्तुत करता है कि संपूर्ण पृथ्वी ईश्वर की रचना है, इसलिए इसका संरक्षण हमारा कर्तव्य है।
- पुराण और धार्मिक परंपराएं पुराणों में अनेकों नदियों और पर्वतों के महत्व का विस्तृत वर्णन मिलता है गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, कावेरी आदि नदियों को माता के रूप में मान्यता देना एवं पूजन करना एकमात्र धार्मिक आस्था ही नहीं, बल्कि जल एवं प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण एवं सुरक्षा सांस्कृतिक जागरूकता का प्रतीक है। इसी प्रकार पीपल, तुलसी, नीम व वटवृक्ष को पवित्र वृक्ष मानना भी पारिस्थितिक संरक्षण एवं वैदिकी ज्ञान की सुदृढ़ता को भी प्रदर्शित करती है।
- लोक परंपराएं एवं पर्व हमारे देश की लोक सांस्कृतिक त्योहार और अनुष्ठानों की प्रकृति से गहरा जुड़ाव है मकर संक्रांति में आकाशीय पिंडों की गति और ऋतु परिवर्तन का उत्सव मनाया जाता है, तुलसी वृक्ष का पूजन भी परंपराओं में शामिल होना भी आयुर्वेद की दृष्टि से उसकी उपयोगिता को दर्शाता है, छठ पर्व में सूर्य और जल की उपासना की जाती है जो हमें प्रकृति से जुड़े होने का एक प्रमाण है, ग्रामीण क्षेत्रों में अनेकों ऐसे खेल पूजन व उत्सव के रूप में मनाया जाते हैं जो कि मानव स्वास्थ्य हेतु आवश्यक है जो हमारी सुदृढ़ परंपरा एवं सामुदायिक विकास की भावना को दर्शाते हैं।

भारतीय कला साहित्य एवं पर्यावरण–

- साहित्य और काव्य में प्रकृति संस्कृत साहित्य के महान कवि कालिदास जी की कृति मेघदूत में बादलों, पर्वतों और वनों का अद्भुत चित्रण मिलता है, तमिल संगम साहित्य में भी पहाड़ों, नदियों, व सागरो का विवरण मिलता है। भारतीय प्राचीन कवि साहित्य में भी प्राकृतिक तत्वों की गहराई से विषय वर्णन मिलते हैं उदाहरणस्वरूप तुलसीदास, सूरदास व कबीर जी के रचनाओं में दिखता है।
- चित्रकला और मूर्ति कला अजंता और एलोरा की गुफाओं में अंकित चित्रों प्राकृतिक सौंदर्य एवं जैव विविधता की स्पष्ट झलक दिखाई पड़ती है, मधुबनी चित्रकला में सर्वाधिक चित्रण पेड़ पौधों, पशु पक्षियों का देखने को मिलता है, पिचवाई चित्रण में वर्षा, ऋतु चक्र और पशु पक्षियों के चित्रण की अधिकता इस बात का स्पष्ट द्योतक है कि चित्रकला और मूर्तिकारों के प्रेरणा स्रोत का कार्य प्रकृति करती है।
- वास्तु कला और पारंपरिक तकनीक गुजरात की बावड़ियां सामुदायिक जल प्रबंधन का उत्तम उदाहरण है, राजस्थान के क्षेत्रों में सुरक्षा कारणों से किला और हवेलियों में पर्यावरण अनुकूल वास्तुकला के प्रयोग से रहने योग्य बनाए जाते थे जिससे तीव्र गर्मी व लू से बचने हेतु घरों में जालियां और वायु संचार की विशेष व्यवस्था की जाती थी, दक्षिण भारत के मंदिरों के प्रांगण में बड़े–बड़े जलाशयों का निर्माण प्रकृति प्रेम अर्थात जल संरक्षण की भावना से प्रभावित है, मैदानी क्षेत्रों में गांव के आसपास बड़े तालाब व पोखरो का सामुदायिक निर्माण करवाना जल संरक्षण को बढ़ावा देना प्रकृति के प्रति प्रेम को दर्शाता है।

परंपरागत समाज और जैव विविधता संरक्षण

लोकगीत और कहावतें– ग्रामीण समाज में लोकगीत एवं कहावतों के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के संदेश दिए जाते हैं जैसे **"जल ही जीवन है" , "जल है तो कल है"** जैसी कहावतें केवल व्यावहारिक अनुभव नहीं, बल्कि पीढ़ियों से संचित पर्यावरणीय जागरूकता का प्रमाण है।

बिश्नोई समाज– यह समाज अधिकांश रूप से राजस्थान में पाया जाता है जो पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनूठी मिसाल है यह समुदाय पीपल एवं खेजड़ी के वृक्षों को काटना तो पाप जबकी जीवन देना श्रेयस्कर मानते हैं। पशु पक्षियों के संरक्षण को भी प्राथमिकता देते हैं जिसमें से खासकर हिरण को ज्यादा ही संरक्षण देते हैं, अपना धार्मिक कर्तव्य समझकर 18 वीं शताब्दी में अमृता देवी विश्नोई और 363 साथी महिलाओं ने वृक्षों को कटने की बजाय स्वयं की बलि देना ज्यादा श्रेयस्कर समझा, नवीन घटनाओं में देखा जाए तो सलमान खान द्वारा राजस्थान में 'हम साथ–साथ हैं' फिल्म शूटिंग 1998 ई. के दौरान किसी के द्वारा काले हिरण के शिकार के उपरांत इस केस से सलमान खान का नाम जुड़ने के कारण आज भी उन्हें बिश्नोई समाज से जान का खतरा बना रहता है, जबकि न्यायालय द्वारा सलमान खान को इस केस से मुक्ति मिल गई है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

चिपको आंदोलन– यह आंदोलन उत्तराखंड के चमोली जिले तत्कालीन उत्तर प्रदेश में 1970 के दशक में पर्यावरण संरक्षण हेतु चलाया गया था। इस आंदोलन का उद्देश्य तत्कालीन वनों की कटौती को रोकना था तथा पर्यावरण संरक्षण हेतु नारा दिया गया **'पारिस्थितिकी ही अस्थाई अर्थव्यवस्था है'** जिससे स्थानीय लोगों को वन अधिकारों को दिलाया जा सके इस आंदोलन के सूत्रधार सुंदरलाल बहुगुणा जी थे। लोग वृक्षों से चिपककर काटने से बचाते थे। यह आंदोलन वैश्विक स्तर पर पर्यावरणीय आंदोलन हेतु प्रेरणा स्रोत बना।

एप्पिको आंदोलन– यह आंदोलन भी चिपको की तर्ज पर दक्षिण भारतीय राज्य कर्नाटक में वृक्षों की कटाई के विरोध हेतु चलाया गया इसकी शुरुआत 1983 में हुई इस आंदोलन के नेतृत्व कर्ता पांडुरंग हेगड़े जी ने किया था।

आधुनिक युग में चुनौतियां व समस्याएं

सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास– लोगों की प्रकृति के साथ आत्मीय संबंधों में कमजोरी देखने को मिल रहा है। नई पीढ़ी पारंपरिक त्योहार व अनुष्ठानों को केवल औपचारिक समझ रही है तथा अपने ऐतिहासिक एवं पारंपरिक ज्ञान व्यवस्था को समझने पढ़ने व उनके वैज्ञानिक विश्लेषण से दूर होती जा रही है।

शहरीकरण और औद्योगीकरण को बढ़ावा– यह समस्या न केवल भारतीय समाज की बल्कि वैश्विक स्तर पर है तेजी से बढ़ते शहरीकरण वह पारंपरिक जल स्रोतों, वृक्षावरणों, कृषि भूमि एवं प्राकृतिक वास स्थलों को नष्ट किया है। औद्योगिकरण प्रदूषण ने जल, मृदा, वायु को विषैला बना दिया है जिससे हमें मिल रहे आहार भी प्रदूषण एवं पोषक तत्वों में ह्रास पाया जा रहा है, जिससे मानव स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव देखने को मिल रहा है।

उपभोक्तावाद सभ्यता को बढ़ावा– मौजूदा उपभोक्तावादी संस्कृति में भारतीय संस्कृति की कड़ियों को कमोंवेश कमजोर किया है, हमारी संस्कृति का मूल ध्येय था कि **'कम में संतोष'** जबकि वर्तमान परिवेश में लोगों को दिखावे की संस्कृति ने ढक लिया है, जिससे हर व्यक्ति अपने आप को सर्वोत्तम दिखाने की होड़ में लगा है जिसका खामियाजा हमारी प्रकृति को अर्थात पर्यावरणीय ह्रास के रूप में देखने को मिलता है।

पर्यटन को बढ़ावा– पर्यटन में वृद्धि से जहां सांस्कृतिक विविधता को समझने और देखने को लोगों को अवसरों में वृद्धि हुई है, वहीं इसकी भारी क्षति हमारी प्रकृति को झेलना पड़ता है। पर्वतों, तीर्थ स्थलों और नदियों के पर्यटन से लोगों के भौतिकवादी संस्कृति के कारण प्रदूषण बढ़ गया है।

सांस्कृतिक विरासत आधारित पर्यावरण संरक्षण के उपाय–

सामुदायिक भागीदारी– हमारा देश आज भी ग्रामीण प्रधान है, जो कि हमें समाज व समुदाय को जोड़े रखता है ऐसे में हमें समाज और समुदाय को जल, जंगल और जमीन की उपयोगिता व आवश्यकता पर प्रकाश डालना चाहिए जिससे समाज का हर नागरिक पर्यावरण की आवश्यकता और ह्रास से प्राकृतिक विनाश एवं संभावनाओं के बारे में जानकारी देने की आवश्यकता है जिससे संरक्षण हेतु जन सहभागिता मिल सके।

शिक्षा व जागरूकता– हमारे स्कूलों और विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले सभी बच्चों हेतु अनिवार्य रूप से अपने संस्कृति और पर्यावरण ज्ञान के रूप में अध्ययन सामग्रियों को जोड़ने की आवश्यकता है साथ ही साथ उन्हें प्रायोगिक ज्ञान भी दिए जाने चाहिए जैसे कि अच्छे पर्यावरण में साथ ही साथ पर्यावरणीय ह्रास वाले स्थानों को दिखाना चाहिए और उसके असर को भी समझाने की आवश्यकता है, साथ ही साथ सांस्कृतिक पहचान को भी हम नागरीक का कर्तव्य और दायित्व होना चाहिए कि वह उसकी पहचान को मजबूती दे।

लोक पर्व और उत्सव– हमारे देश को उत्सवों की भूमि के रूप में जाना जाता है ऐसे में हमारे त्यौहारों को नवीन रूप देते समय हम अपनी सभ्यता का ध्यान में रखकर प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर ही बल देने की आवश्यकता है उदाहरणस्वरूप गणेश उत्सव में हम मिट्टी की मूर्तियों एवं प्राकृतिक रंगों का उपयोग करें, मुहर्रम के तजिए में बनाए जाने वाले कलाकृतियों में भी प्राकृतिक संसाधनों का ही उपयोग किया जाए, होली के समय खेले जाने वाले रंगों में भी प्राकृतिक रंगों का उपयोग करने की आवश्यकता है ऐसे ही लगभग सभी त्योहारों में हमें प्रकृति से जुड़ने की आवश्यकता है, जिससे पर्यावरणीय प्रदूषण को कम किया जा सके।

ग्रीन हेरीटेज नीति– सरकार को ध्यान देने की जरूरत है कि कैसे किसी क्षेत्र को हरा भरा बनाया जा सके अतः सरकार को ग्रीन हेरीटेज की नीति बनानी चाहिए, जिसके अंतर्गत ऐतिहासिक स्मारकों और धरोहर स्थलों पर पर्यावरणीय संरक्षण की ठोस योजना लागू की जा सके।

धार्मिक स्थलों पर पर्यावरणीय प्रबंधन– मंदिरों, मस्जिदों, गुरुद्वारा और चर्च में स्वच्छता के साथ हरित परिसर के अनिवार्य रूप से विकसित करना चाहिए, जिससे जुड़े लोगों के मनोभाव में भी सकारात्मकता आती है, और पर्यावरण संरक्षण के दृष्टिकोण को लेकर लोग जागरुक एवं सक्रिय भी होते हैं।

निष्कर्ष

हमारी सांस्कृतिक विरासत यह संदेश देती है कि प्रकृति केवल उपयोग की ही वस्तु नहीं, बल्कि हम सभी के जीवन का आधार भी है। हमारी परंपराओं व सांस्कृतिक प्रथाओं में निहित पर्यावरणीय मूल्य आज भी वर्तमान समय में भी प्रासंगिक है, यदि वर्तमान विकास की नीतियों को इन मूल्यों से जोड़ दिया जाए तो सतत विकास के मार्गो को प्रशस्त किया जा सकेगा। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और पर्यावरणीय संरक्षण एक दूसरे के पूरक है। हमें अपने अतीत से प्रेरणा लेते हुए वर्तमान स्थिति के अनुसार नित नए प्रयोग किए जाने की आवश्यकता है, अतः पर्यावरण से ही जीवन संभव है।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-10| October - 2025

संदर्भ सूची

1. ऋग्वेद, अथर्ववेद एवं यजुर्वेद (अनुवादित संस्करण)
2. उपनिषदों में पर्यावरण दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली
3. शर्मा, एच.डी. (2018). भारतीय संस्कृति और पर्यावरण. दिल्ली, हिंदी ग्रंथ अकादमी।
4. सिंह, रामधारी. (2020). भारतीय कला और पर्यावरण चेतना. वाराणसी, भारती प्रकाशन।
5. गाडगिल, माधव एवं गुआहा, रामचंद्र (1992). Ecology and Equity: The Use and Abuse of Nature in Contemporary India
6. जोशी, वीरेन्द्र (2017). चिपको आंदोलन, एक पुनर्पाठ. नैनीताल, उत्तराखंड अध्ययन केंद्र।
7. बिश्नोई, अमृतादेवी बलिदान स्मृति ग्रंथ (राजस्थान सरकार प्रकाशन, 2005)।
8. UNESCO- (2014)- Cultural Heritage and Sustainable Development- Paris
9. Government of India (2020)- National Mission on Cultural Mapping and Heritage Conservation- Ministry of Culture.
10. पटेल, के.एम. (2019). भारतीय वास्तुकला और पर्यावरण अनुकूलता. अहमदाबाद, नूतन प्रकाशन।